Vol 5 Issue 2 Nov 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Nov - 2015

"राजनीतिक जीवन और राष्ट्रीय समस्याएँ"

ललिता रानी
सहायक प्राध्यापक हिन्दी , बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

सारांश –

भारतीय आम जनता को राजनीतिक कुचक्रों ने इतनी बार छला है कि अब भी किसी राजनीतिक दल या राजनेता पर विश्वास करने को तैयार नहीं हैं आज राजनीतिक परिवेश में अनेक छुटभैये अपने क्षेत्रीय नेतृत्व की रक्षा के लिए मंत्रियों और वरिष्ठ नेताओं की हर तरह से जी–हुजूरी कर रहे हैं। पद प्राप्त कीने के लिए सारे मूल्यों और नैतिकताओं को ताक पर रखा जा रहा है।

मुख्य शब्द – आम जनता, राजनीतिक परिवेश राष्ट्रीय समस्याएँ।

प्रस्तावना –

वर्तमानकालीन राजनीति में राजनेताओं के रूप में नये सामंत पैदा हो रहे हैं। हेतु भारद्वाज इस संबंध में कहते हैं – "आज चारों अव्यवस्था अनुशासनहीनता, दायित्वहीनता अकार्य– कुशलता ,खोखली नारेबाजी ने गांधीजी के रामराज्य का स्वप्न बना दिया हैं।[1] "अवसरवादी लोगों ने प्रशासन में घुसकर चोरबाजारी, घूस और भ्रष्टाचार का स्थापित किया है। धन और बल पर प्राप्त बहुमत के सहारे लोकतंत्र पनपने लगा। देश में तानाशाही की एक नयी जमात पैदा हो गयी है। नैतिक मूल्य ध्वस्त हो रहे हैं। "वास्तव में यह दौर राजनीति में मूल्यों की गिरावट का था। इतना झूठ ,फरेब ,छल पहले कभी नहीं देखा गया था। दगाबाजी संस्कृति हो गयी हैं। दो–मुंहापन नीति बन गयी है। बहुत बड़े–बड़े व्यक्तित्व बौने हो गये हैं। किसी का किसी पर विश्वास नहीं रह गया था, न व्यक्ति पर न कार्य पर। पालिका, विधायिकी और न्यायपालिका का नंगापन व्यक्त हो गया। श्रद्धा का भी दौर था। अभी भी सरकार बदलने के बाद स्थितियाँ सुधरी नहीं ,गिरावट बढ़ रही है। किसी दल का बहुत अधिक सीटें जीतना और सरकार बना लेना लोकतंत्र की कोई गारंटी नहीं है।"[2]

भारतीय संसद लोकतंत्र को बनाये रखने की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था है, जो निर्वाचित प्रतिनिधियों से बनती है। संसद ज्यादातर गैर जिम्मेदार और भ्रष्टाचारी लोगों से भरी पड़ी है। वर्तमान मनमोहन की केंद्रीय सरकार मे अनेक दागी मंत्रियों को सत्ता के सिंहासन पर बैठा कर यिा जाता है। सम्भवतः अधिकतम प्रतिनिधि शोषक शासक दल के हैं, जिनके पूर्वाग्रह और मूर्खताओं के सही प्रतिनीधि की आवाज दबा दी जाती रही है। समाजवाद लाने के लिए हमारी सरकार ने गरीबी हटाओं ,जैसे आंदोलन चलाये। इन आंदोलन से गरीबी की गरीबी हटी न अमारों की अमीरी कम हुई। सरकार ने गरीबी हटाने का प्रमाणिकता से प्रयत्न ही नहीं किया। अगर सरकार प्रमाणिकता से कदम बढ़ाती तो गरीबों की अवस्थ में कुछ न कुछ परिर्वतन अवश्य आता। हर दल की अपनी सत्ता को बनाये रखने के लिए नारों और योजनाओं की राजनीति करती रही है। जब सत्ता की कुर्सी डगमगाने लगती है तो सहारा लेकर उसे बचाने का प्रयास किया जाता है। श्रीमती इंदिरा गांधी को जब अपनी सत्ता का आसन डगमगाता हुआ दिखायी देने लगा तो सत्ता पर बने रहने के लिए आपातकाल की घोषणा कर दी। आपातकाल में देश सौ साल पीछे चला गया। सत्ता के बल पर आम जनता का बेमुसार शोषण किया गया। आपातकालीन शोषण की चर्चा यावेंद्र शर्मा ने 'प्रजाराम' में विस्तारित रूप से की है। उपन्यास के बी. नाथ आपातकाल के सम्बन्ध में कहते हैं, "लोकतांत्रिक नैतिक और कानूनी परम्पराओं व नियमों को ताक में रखकर प्रधानमंत्री ने केवल अपने आप को राज्य सत्ता में रखने के लिए आपात स्थिति की घोषणा करवा दी है। दोष हिंसक वातावरण तथा देश में व्याप्त अशांति अव्यवस्था और अराजकता के माथे मढ़ दिया हैं।"[3]

आपातकालीन घोषणा के कारण देश के सामने गंभीर समस्या निर्माण को गयी थी। विकास की दृष्टि से देश अनेक साल

पीछे चला गया। इसी भावना को व्यक्त करते हुए बी. नाथ कहते है – "जब व्यक्ति सत्ता का दुरूपयोग करता है, तब ऐसी ही स्थितियाँ पैदा हो गयी है। हम सब ने सत्ता का दुरूपयोग किया हैं इसीलिए हमें यह दिन देखने को मिला है।"[4]

आपातकाल की घोषणा मात्र जनता तथा विरोधी दलों के नेताओं के विरोध को दबाने के लिए की गयी थी। आपातकाल में अफसरशाही ने बेतहाशा हाथ धो लिए। प्रजाराम कहता है–"सर आप इतने लाल–पीले क्यों हो रहे हैं? इमरजेंन्सी अफसरशाही और चमचों के लिए कहाँ हैं? उनके लिए तो मजे–ही–मजे हैं?[5] "आपातकालीन समय में नौकरशाहों और चमचों ने आम जनता बेरहमी से लूटना शरू देश दहशत से घिर गया है। सत्य आत्मा की गहराइयों में चला गया है। इनकमटैक्स इंजीनियर, अफसर ,तहसीलदार,पटवारी ,संसद सदस्य विधायक सब के सब इमरजेंसी के नाम पर प्रंजा को लूट रहे हैं।"[6]

आजादी के बाद आम जनता के हत्यारे और शोषक ही खद्यर पहनकर कांग्रेसी बन गये थे। चरित्रहीन शोषक और जनता के लुटेरे कांग्रेस में आकर सत्ता में घुसे असामाजिक तत्वों के संबंध में 'हजार घाड़ों का सवार ' का गीधू चरखू से कहता है, "तुम तो दिल्ली में रहते हो, तुम्हें यहाँ के लोगों की असलियत का पत्ता नहीं हैं? ये गणेश बाबू जिसकी किसी भी क्षेत्र में कोई नैतिकता नहीं है, जिसने सदा गरीब औरतों की इज्जत लूटी है और मजदूरों का शोषण किया है। दूसरा यह चतुरभुग समाजसेवा के नाम पर सिर्फ पैसा बनाता जा रहा है, अपनी बीबी के अलावा इसने दो और औरत रख छोड़ी हैं। वे उम्र में छोटी हैं। उन दोनों बेचारियों कों भूख ने मार डाला और अब यह उनको रखैल की तरह उपभोग करता हैं।[7]

विश्लेषण :

आर्थिक घोषणाओं को सही तरह से लागू नहीं किया जाता और आम जनता की आर्थिक स्थिति बद से बदतर होती चली जाती है। सरकार आम जनता को उचित मूल्य पर वस्तुएँ उपलब्ध कराने के लिए कंट्रोल की घोषणा के पहले ही सरकारी दुकानों से वस्तुएँ गायब हो जाती हैं और काले बाजार में और ही ऊँचे दामों में बिकाने लगती है। व्यापारियों और सरकारी व्यवस्था की मिली भगत के कारण सारी घोषणाओं आम आदमी के लिए वरदान के बजाय अभिशाप सिद्ध होती है। सरकार बजट बनाती है। बजट की घोषणा के पूर्व ही बाजार से सामग्री गायब हो जाती है। अगर मिलती भी है तो काफी ऊँची कीमते देने पर ही। सरकारी बजट आम आदमी की स्थिति को बदतर करता है। महँगाई से आम आदमी की कमर टूट रही है।

आज बहुत सारे नेता चुनाव के पहले जनता को बड़े –बड़े आश्वासन देते है। और चुनकर आने के बाद आँखे मोड़ लेते है। नेताओं के दरबार में मात्र नोटों की बात चलती है। गिरिराज किशोर 'परिशिष्ट ' में कहते हैं, "सच पूछो तो मिनिस्टर हो तो मिनिस्टर हो या संसद इनके यहाँ दो ही भाषाएँ चलती हैं, नोट की या वोट की।"[8]

भारतीय नेताओं की उपदेश प्रियता व्यावहारिक अकर्मण्यता की सूचक है। जैसे–जैसे वे जनकल्याण के कार्य से विमुख होते गये भाषणें में उपदेशों और खोखले आदर्शों की भरमार हेाती है। ये नेता जनता ,संस्कृति ,जीवन इत्यादि बड़े–बड़े आदर्शों की बात करते हैं पर जीवन के यथार्थ धरातल पर स्व–प्रतिष्ठा, यश, मान,प्रतिमा के भूखे है। आज के राजनेता सत्तालोलुप है। वे सत्ता प्राप्ति के लिए कुछ भी करने को सदा तत्पर रहते हैं।

श्रीलाल शुक्ल के 'विश्रामपुरा का संत' (1998) में भी प्रचारिकीपन की कोई गुंजाइश नहीं हैं। इस उपन्यास में भूदान आन्दोलन में प्रविष्ट भ्रष्टाचार के दर्शन कराना, नौकरशाही और राजनीतिज्ञों के बीच की दाँतकाटी रोटी के सम्बन्ध को दिखानाराजनीति में पनपने वाली चालाकी और चापलूसी को कुवँर साहब के माध्यम से दिखाना, भूदान की सहायता से गरीब किसानों की मदद पर प्रकाश डालना, भूदान के परिप्रेक्ष्य में उभरती हुई आर्थिक समस्याओं पर चिन्तन करना, साहूकारी पाश को फेंककर गरीबों की जमीनें हड़प करने वाले जमींदारों की हड़प नीति पर सोचना, कुवँर जयंती प्रसाद सिंह के प्रेम–सम्बन्धों पर चिन्तन करना, कुवँर जयंती प्रसाद सिंह की अकेलेपन की पीड़ा पर सोचना आदि कई उद्देश्यों का निर्वाह यहाँ हुआ है। परन्तु ये उद्देश्य प्रचारिका से हटकर यथार्थ स्थिति के परिचारक लगते हैं।

आज चुनाव इतने महंगे हो गए है। कि सामान्य व्यक्ति ही क्या मध्यवर्गीय भी चुनाव में खड़ा रहना तो दूर चुनाव के बारे में सोच भी नहीं सकता। टिकट प्राप्ति से लेकर सत्ता प्राप्ति तक पानी की तरह रूपया बहाने के बाद सफलता मिलती है। जहाँ दो वक्त की रोटी नसीब नहीं होती, वे कहाँ से लायेंगे इतना सारा धन। लोकतंत्र ने आम जनता को वोट के साथ चुनाव लड़ने का भी अधिकार दिया है। मात्र आम जनता केवल मतदान करने की ही अधिकारी है, चुनाव लड़ने की नहीं। उपन्यासकार यशवंतसिंह नाहर अपने उपन्यास 'चालीस साल बाद' में 'इंद्रसिंह' के माध्यम से कहते हैं "चुनाव बड़ा खर्चीला हो गया। सही यह है कि गरीब चुनाव नहीं लड़ सकते। मुझे मोर्चे से भी कुछ नहीं मिला, कौन देता, यही नहीं मेरे अतिरिक्त एक विधायक का व्यय भी मैंने किया है।''[9] इस प्रकार चुनाव में ऐसे ही राजनेताओं को टिकट दिया जाता है जो स्वयं का चुनावी खर्चा तो उठाएं और दल को भी आर्थिक मदद करें।

वर्तमानकालीन राजनीति में जिसे सत्ता प्राप्त करनी होती है, उसे धन की बरसात करनी पड़ती है। धन के साथ–साथ तिकड़मबाजी का भी सहारा लेना पड़ता है। 'दारूलशफा' के प्रसिद्ध राजनेता चौधरी कहते हैं, ''मुख्यमंत्री, पार्टी अध्यक्ष, कार्यकारिणी संसदीय बोर्ड या विधायकों की गिनती से नहीं राजनीति की तिकड़म से बना करते हैं।''[10] आज चुनाव में वही सफल होता है जो दांव–पेचों को अच्छी तरह जानता है। धन सत्ता, तिकड़मबाजी आदि के सहारे ही राजनीति में विजय प्राप्त की जाती है। श्रेश्ठ उपन्यासकार विश्वनाथ मिश्र कहते हैं– 'दांव–पेचों की बात है। जो अपने विरोधी के खिलाफ जनता को भड़काने में सफल हो गया, वही चुनाव जीत गया। जिसको टिकट मिलना है वह पार्टी के नाम से खड़ा रहता है, वैसे ही उम्मीदवार लोकसभा में जाकर समा जाते हैं, वहाँ जिसकी लाठी उसकी भैंस, कोई कुछ बन जाता है तो कोई कुछ।''[11]

आज राजनीति धन कमाने का माध्यम बन गयी है। राजनीति ने व्यापार का रूप धारण कर लिया है। इसीलिए सभी प्रतिष्ठित परिवार राजनीति में कूद पड़ते हैं। धन और रुतबा कमाने का सबसे आसान मार्ग राजनीति है। 'चालीस साल बाद' के पं. रोशनलाल इस सम्बन्ध में कहते हैं, ''हमारे बड़े मंत्री ने सेठों से रुपया लिया और इन मेम्बरों को खरीदने में खर्च किया ताकि वे मुख्यमंत्री बने रहें और रिश्वत खाते रहें घर मरते रहें और जब मंत्री नहीं रहे तो करोड़ों रुपये के काले धन पर सांप बनकर बैठे रहे।''[12] आज चुनावों में लाखों रुपयों को पानी

की तरह बहाया जाता है। यह सभी रुपया कहाँ से आता है? इतना धन राजनेता कैसे इकट्ठा करते हैं। इसी प्रश्न को 'चालीस साल बात' में पंडित सोहनलाल उठाते हैं। वे इस सम्बन्ध में कहते हैं– ''एक–एक विधानसभा चुनाव में एक–एक लाख रुपये खर्च होते हैं, वह रुपया कहाँ से आया। विधानसभा चुनाव में पाँच से सात लाख रुपये और लोकसभा चुनाव में दस लाख से एक पैसा भी कम खर्च नहीं होता। सोहनलाल के प्रश्न का उत्तर देते हुए उपन्यास के मुख्यमंत्री कहते हैं–''चुनाव के लिए खर्चा चाहिए पार्टी को चलाने के लिए भी, यह बस चंदे से तो आयेगा नहीं, किसी–न–किसी से लिया जायेगा और सेठ देता है तो कुछ रियायत भी चाहता है।''[13]

वर्तमानकालीन राजनीति में व्यापारी कारखानादार चुनाव में अपना रुपया लगाते हैं। सत्ताधारी तथा विरोधी दलों को भी करोड़ों रुपया देते हैं। वह जब राजनेताओं को चुनाव में लाखों–करोड़ों रुपया देते हैं तो उनकी कुछ अपेक्षाएँ भी होती हैं। वे कुछ रियासत भी चाहते हैं। चुनाव में लगाया गया रुपया एक प्रकार का विनियोग ही है। व्यापारी लाखों लगाते हैं और करोड़ों वसूल करते हैं। नेताओं के चुनकर आने के बाद सदस्य और उनके सहायक प्राप्त अधिकारों का पूरा–पूरा फायदा उठाते हैं। और खर्च किये धन का कई गुना वसूल कर लेते हैं।

आज चुनावों में काले धन की उपयोगिता श्वेत धन से कहीं अधिक बढ़ गयी है। काला धन सरकार को बनाता है तो गिराता भी है। प्रजातंत्र में प्रजा चाहे तो तंत्र को खरद भी सकती है। यह सुविधा एकतंत्र में नहीं होती। इसी कारण प्रसिद्ध विचारक प्रो. लास्की 'प्रजातंत्र' को श्रेष्ठ मानते हैं। मार्क्स के अनुसार राजनीति जो निश्चित होती है। इसी कारण विधायक जो खरीदे जाते हैं, वे काले धन से ही खरीदे जाते हैं।''[14]

चुनावों में धन के साथ–साथ जातियाँ भी अहं भूमिका निभाती हैं। भारत वर्ष में आजादी के बाद जाति–पांति के भेदों को अधिक नहीं माना जाता था। और न ही व्यक्ति पर जाति का कोई नियंत्रण होता था। परन्तु राजनीतिक स्वार्थ के कारण नगरों में भी जातिवाद अप्रत्यक्षता से फल–फूल रहा है। चुनावों में अधिकतर बहुसंख्यक जाति के सदस्य ही विजयी होते हैं। जाति के नाम पर टिकट भी मांगे जाते हैं और वोट भी। अतः राजनीतिक दल भी अधिकतर बहुसंख्यक जाति के धनवान राजनेताओं को ही टिकट देते हैं। अपने जाति के बलबूते पर वे चुनकर भी आते हैं। 'एक और मुख्यमंत्री' का मुख्यमंत्री अरविन्द चौधरी दीनानाथ को ऐसे चुनाव क्षेत्र से खड़ा करता है जहाँ चौधरियों का बहुमत है। विरोधी दल भी एक चौधरी राजनेता को ही दीनानाथ के विरोध में खड़ा करते हैं।''[15]

आज मैं देखती हूँ कि वर्तमान राजनीति में आतंकवादी नेता बड़े झगड़ालू बन गये हैं। उनका आपसी झगड़ा मात्र सत्ता प्राप्ति के लिए ही है। करोड़ों भारतीयों के भविष्य का फैसला करने वाली भारतीय संसद में हमारे भाग्यविधाता संसद बिगड़े हुए छात्रों के समान संसद में झगड़े करते हैं। मात्र संसद ही नहीं विधायक भी कुछ कम नहीं हैं। वे विधानसभा में अधिवेशन के समय गालीगलोच के साथ मारपीट भी करते हैं। ऐसे माहौल में प्रामाणिक राजनेताओं का दम घुटने लगता है।

वर्तमान राजनीति में भ्रष्टाचार का चक्र इतना व्यापक हो गया है कि राजनेता कितना भी प्रामाणिक क्यों न हो एक–न–एक दिन इस भ्रश्ट जाल में फंस ही जाते हैं। 'एक और मुख्यमंत्री' का मुख्यमंत्री अरविन्द प्रामाणिक विधायक बनारसीदास को भ्रष्टाचारी चक्रव्यूह में फँसाने का प्रयास करते हुए कहता है, ''तुम बनारसी ठहरे गधे के धे। देखो मैंने जिन्हें कॉटन व शुगर मिलों के लायसेंस दिलाये हैं, उनके यहाँ से बंधा बंधाया रुपया आता है। चतुर आदमी वह है जो कोयले की दलाली करे पर अपने हाथ काले न होने दे।''[16]

वर्तमान नेताओं के चरित्र में छल, कपट पदलोलुपता, अवसरवादिता, अनैतिकता आदि सभी गुण घिर गये हैं। आज जो राजनेता भ्रष्टाचार में जितना ज्यादा डूबा है, उतना ही वह राजनीति में सफल हो जाता है। समाजवाद के बहाने नेतागण पद, शक्ति और दौलत बटोरने में बेचैन हैं। उनके लिए जनसेवा अथवा ईमानदारी जैसे शब्द जनता को मूर्ख बनाकर उनको वोट प्राप्त करने के साधन मात्र हैं, साध्य तो कुर्सी है, शक्ति है, पैसा है।

आजादी के बाद देश विकास के नाम पर पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण किया गया। आज तक आठ पंचवार्षिक योजनाएँ कार्यान्वित हो चुकी हैं। क्या पंचवार्षिक योजनाओं से देश का विकास हुआ? आज अस्सी करोड़ आम जनता की हालत देखते ही इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। पंचवार्षिक योजनाओं से विकास तो हुआ लेकिन किन का हुआ यह 'एक मंत्री स्वर्गलोक' में का इंद्र 'अ' से बतलाता है। वह कहता है, 'अ' जरा बताइए तो चार–चार पंचवार्षिक योजनाएँ बनाकर कितना उद्धार कर लिया था अपने देश का? उद्धार यदि हुआ भी तो बड़े–बड़े उद्योगपतियों का, व्यापारियों का, नेताओं का, ऊँची कुर्सियों पर आसीन सरकारी कर्मचारियों का और इनके पास के दूर के रिश्तेदारों का। साधारण जनता तो उलटे पहले से ज्यादा भूखों मरने लगी।''[17]

हमारे वर्तमानकालीन सांसद और विधायक, दिन प्रतिदिन सत्ता में धन बटोरते रहे, सुविधा बढ़वाते रहे और विलासी जीवन जीते रहे। वे मात्र सत्ता का उपभोग करना जानते हैं। अपने कर्तव्य के प्रति उनको कुछ लेना–देना नहीं है। सांसद, विधायक और मंत्रियों को विविध सुविधाएँ दी जा रही हैं। सामान्य जनता भूखी मर रही है और हमारे नेता अपनी सरकारी सुविधाएँ तथा वेतन अधिक बढ़ाते रहे हैं।

आज के राजनेता भौतिकता के साधन जुटाने में लगे रहते हैं और असंख्य आम जनता दो वक्त की रोटी के लिए तरस रही है। राजनेताओं ने 'तू भी खा और मैं भी खाऊँ' की नीति अपना ली है। देश के रक्षक ही भक्षक बनते जा रहे हैं। अपने निजी स्वार्थ के लिए भारतीय नीतियों को बेचा जा रहा है। राजनीति का अपराधीकरण हो गया है। 'समाजवाद' का नारा लगाकर देश में भ्रम पैदा किया जा रहा है। राज्य की सत्ता ऐसे लोगों के हाथों में सौंपी जा रही है जो स्वयं भ्रष्टाचारी हैं।

वर्तमानकालीन राजनीति में राष्ट्र हितकारी मूल्यों का विघटन हो रहा है। राजनेता भ्रष्टाचार के दलदल में फँसकर देशहित को भुलाकर स्वार्थ साधने लगा है। राजनीति और प्रशासन वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था के लिए एक–दूसरे को दोषी ठहराते हैं। देवेश ठाकुर के 'जनगाथा' का सजग, स्वाभिमानी पत्रकार जोशी कहता है, ''इस जनतंत्र में जन की कोई अहमियत नहीं है। उसके जो प्रतिनिधि हैं सब साले घटिया हैं, स्वार्थी हैं। प्रतिनिधियों को शासन जन का शासन नहीं होता। यह प्रजातंत्र जो है ना एक बहुत ढकोसला है। आँखों में धूल झोंकना है, बस।''[18]

आज लगभग सभी राजनेता भ्रष्ट बन गए हैं। राजनेता अवसर के अनुकूल अपनी राजनीतिक पैतरेबाजी दिखाते हैं। इन नेताओं ने स्वयं या इनके रिश्तेदारों अथवा चाटुकारों ने उत्पादन, वितरण, शिक्षा, प्रेस आदि सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर कब्जा कर रखा है। इनका एकमात्र प्रयोजन चुनाव जीतकर धन और सत्ता प्राप्त करना है। समीक्षक बाबूराव गुप्त कहते हैं, ''वे निर्वाचन के समय जितने नम्र और विनीत

रहते हैं, जनसेवा की बातें करते हैं और बड़ी–बड़ी आशाएँ दिखाते नहीं थकते किन्तु निर्वाचन होने के बाद सब भूल जाते हैं।''[19]

स्वाधीनतापूर्व अपने आपको देश सेवक समझने वाले राजनीतिक कार्यकर्ता स्वातंत्र्योत्तर काल में देश के स्वामी बन गये। स्वामी बनकर देश की संपत्ति का खुला दुरुपयोग करने लगे। व्यक्तिगत स्वार्थ के आगे देशहित को तुच्छ मानने लगे। चारों ओर भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार फैल गया है। इस भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में 'चालीस साल बाद' का द्वारका सेठ रामधन से कहता है, ''भाई साहब, जो न कहा जाए, वह थोड़ा है, विधायक तबादलों में खा रहे हैं, कार्यकर्ता एजेंट का काम करता है, वे भी कुछ हिस्सा रख लेते हैं, लोकतंत्र में भ्रष्टाचार भी लोकतांत्रिक हो गया है।''[20]

निष्कर्ष :

समग्रतः यह कहना उचित समझती हूँ कि आज देश में प्रजातंत्रीय व्यवस्था में सभी व्यवस्थाएँ ध्वस्त हो गयी हैं। यहाँ तक कि न्याय व्यवस्था भी चरमरा चुकी है। आज का मिडिया वर्ग दिगभ्रमित होकर गुंड़ों, अमीरों की आवाज बनकर रह गए हैं। वर्तमानकालीन समाचारपत्र किसी–न–किसी राजनीतिक दल से जुड़े हुए हैं। समाचारपत्रों को राजनेताओं के गुण–गान गाने से ही फुरसत नहीं मिलती। राजनेताओं की बड़ी–बड़ी तस्वीरों–अन्धपन फैलाने वाले समाचार और छोटे–बड़े अनेक विज्ञापनों से समाचार भरे पड़े होते हैं। आज का समाचार पत्र कल का रद्दी बन गया है। स्वातंत्र्योत्तर युग में समाचार पत्रों का प्रमुख उद्देश्य समाज–प्रबोधन था। आज मात्र धन कमाना उनका उद्देश्य बन गया है।

संदर्भ –

1.स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिभा, पृष्ठ 43, भारद्वाज.
2.विकलांग श्रद्धा का दौर–कैफियत की भूमिका से, हरिशंकर परसाई.
3.प्रजाराम, पृष्ठ 11, यादवेन्द्र शर्मा.
4.वही, पृष्ठ 17.
5.वही, पृष्ठ 33.
6.वही, पृष्ठ 72.
7.हजार घोड़ों का सवार, पृष्ठ 364, यादवेन्द्र शर्मा.
8.परिशिष्ट, पृष्ठ 35, गिरिराज किशोर.
9.चालीस साल बाद, पृष्ठ 13, यशवंत सिंह नाहर.
10.दारुलशफा, पृष्ठ 166, राजकृष्ण मिश्र.
11..दांवपेच, पृष्ठ 121, विश्वनाथ मिश्र.
12.चालीस साल बाद, पृष्ठ 19, यशवंत सिंह नाहर.
13.वही, पृष्ठ 119.
14.शोकसभा, पृष्ठ 61, रवीन्द्रनाथ त्यागी.
15.एक और मुख्यमंत्री, पृष्ठ 216–217, यादवेन्द्र शर्मा.
16.एक और मुख्यमंत्री, पृष्ठ 133, यादवेन्द्र शर्मा.
17.एक मंत्री स्वर्गलोक में, पृष्ठ 152, शंकर पुणतांबेकर.
18.जनगाथा, पृष्ठ 157, देवेश ठाकुर.
19.उपन्यासकार नागार्जुन, पृष्ठ 204, बाबूराव गुप्त.
20.चालीस साल बाद, पृष्ठ 45, यशवंत सिंह नाहर.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org